C-04

U-03

Q. विद्यालय में भाषा एक विषय और एक माध्यम है, कैसे वर्णित करें।

How the language as a subject and as a medium in school explain it.

Ans- भाषा, भावों, विचारों तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति का साधन है, जो विद्यालय पाठ्यक्रम में भाषा एक माध्यम के रूप में तथा एक विषय के रूप में होती है जो निम्न है (NCF 2005) के अनुसार :-

भाषा माध्यम के रूप में :- स्कूली शिक्षा के सन्दर्भ में भाषा पाठ्यचर्या का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। संवाद और संप्रेषण के अनिवार्य प्राथमिक कार्यों के अतिरिक्त शिक्षण के संपूर्ण क्रियाकलापों में भाषा ही माध्यम बनती है तथा अवधारणाओं के निर्माण एवं ज्ञान के सृजन में बुनियादी भूमिका निभाती है। हम अपने विचारों और भावों को भाषा में न केवल अभिव्यक्त करते हैं बल्कि सोचने, महसूस करने और स्मृतियों में सहेजने का काम भी भाषा के द्वारा ही संभव हो पाता है। विचारपूर्वक देखें तो एक हद तक निजी और संपूर्ण रूप में सभी सामाजिक गतिविधियों का संचालन भाषा की ही सहायता से संभव हो पाता है। यदि किसी भाषा का प्रयोग पूरी पाठ्यचर्या में होता है और इस कारण उसकी पढ़ाई सारी विषयों के साथ होती है तब भी अनुदेश की भाषा के मुद्दे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षा होती है। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकि अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। इस विषयों को लेकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किए जाए कि वे अलग-अलग पुस्तकों का अध्ययन करें या उन भाषाओं में लोगों से बातचीत करे या उन भाषाओं में लोगों से इंटरनेट से अंग्रेजी में सामग्री एकत्रित करें। भाषा को लेकर पाठ्यचर्या में ऐसी नीति अपनाने से स्कूल में बहुभाषिकता को बढ़ावा मिलेगा।

साथ ही, भाषा की शिक्षा कुछ अनुठे अवसर उपलब्ध कराती है। प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से संपूर्ण पाठ्यचर्या के अंतर्गत भाषा शिक्षण का विशेष महत्व है और बाद में सभी शिक्षण रूप अर्थ में भाषा शिक्षण ही होता है। यह दृष्टिकोण विषय के रूप में अंग्रेजी और माध्यम के रूप में अंग्रेजी की दूरी को पार सकेगा। इस तरह से हम समान स्कूली पद्धति की दिशा में प्रगति कर सकते हैं, जिसमें भाषा शिक्षण और शिक्षण के माध्यम के रूप में भाषा के उपयोग में भेद न हो।

इन दोनों उदाहरणों में मुख्य बात यह उभरकर आती है कि विभिन्न विषयों का अध्ययन करते समय भी हम एक प्रकार से भाषा ही सीख रहे होते हैं। हम जानते हैं कि विभिन्न विषयों की प्रकृति और अवधारणाएँ भिन्न होती हैं, अतः उन अवधारणाओं को संप्रेषित करने वाले शब्द या वे शब्द जो अवधारणाओं के साथ संयोजित होते हैं और जिन्हें "प्रयुक्ति" कहते हैं - भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान विषय में वायुमंडल, स्थलमंडल, जलमंडल, जलवाष्प, मृदा, प्रकाश संश्लेषण, पादप, वन, स्त्री केशर, पुंकेसर, परागकण, दहन, श्वसन, विकिरण, जीवाश्म इंधन, अवशोषित, विलियत आदि अवधारणाएँ एक विशिष्ट अवधारणा से संबंध है। इसी प्रकार गणित विषय में "त्रिभुज, आयतन, लंब, समीकरण, वृंद आरेख आदि अवधारणाएँ एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होती है। जब बच्चे इन विषयों को पढ़ते हैं तो ये सभी शब्द बच्चों के शब्द भंडार का हिस्सा भी बनते हैं और बच्चे यह समझ विकसित करते हैं कि शब्द भिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ संप्रेषित करते हैं।

भाषा विषय के रूप में :—

एक विषय के रूप में प्रायः तीन भाषाओं के अध्ययन का प्रावधान हमारे विद्यालयों में है। ये भाषाएँ हो सकती है- मैथिली, भोजपुरी, हिंदी, अँग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला आदि। इकाई में त्रिभाषा सूत्र में माध्यम से अधिक भाषाएँ के शिक्षण की स्थिति को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। विद्यालयों में एक विषय के रूप में एक से अधिक भाषाएँ प्रायः प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा और तृतीय भाषा

के रूप में पढ़ाई जाती है। जिसका सीधा - सा अर्थ यह है कि बच्चों में इन भाषा के प्रयोग की कुशलता या क्षमता उन्हें जीवन की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। वे अपनी जीवन में भाषा का अनेक प्रकार से प्रयोग करते हैं, जैसे - अपनी इच्छा को प्रकट करना।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त तथ्य से स्पष्ट होता है कि विद्यालय में भाषा एक विषय एवं एक माध्यम दोनों है।